II उदारवाद से क्या आशय है? वर्तमान स्थिति बताइए।

Post Liberalism

उदारवाद एक ~~नई~~ बौद्धिक आन्दोलन है जो सामन्तवाद के पतन के बाद ~~व्यक्ति आर्थिक स्वतन्त्रता~~ राजनीति को आम और व्यवस्था को आकार देने के लिए आवश्यक है यह बदलती हुई परिस्थितियों के नई चुनौतियों का सामना करने लिए नए-नए विचारों को अपनाता आया है। यह सामाजिक प्रगति को आगे बढ़ाने के लिए व्यक्ति को अधिक से अधिक स्वतन्त्रता देने का पक्षधर रहा है

हालाँकि 17 वीं शताब्दी से ही उदारवादी शब्द का प्रयोग शुरू हो गया था किन्तु इंग्लैण्ड में 19 वीं सदी के आरम्भ में इसकी चर्चा जोरों पर थी उदारवादी विचारक स्वतन्त्रता के प्रबल समर्थक थे

उदारवादी आन्दोलन यूरोप के 16वीं सदी में धर्म-सुधार के रूप में लगभग आरम्भ सत्रहवीं शताब्दी में सत्य के अन्वेषण के लिए वैज्ञानिक पद्धति को प्रोत्साहन दिया गया तथा उदारवादियों ने इसे अपने आदर्शवादिता के रूप में अपना लिया

अठारहवीं शताब्दी में सम्पूर्ण पश्चिमी जगत में बौद्धिक क्रान्ति आई। इस दौरान पश्चिमी जगत ने तर्क-बुद्धि पर आधारित ज्ञान को महत्व देना आरम्भ किया बाद में यही उदारवाद का आदर्श बन गया

लास्की के शब्दों में ने भी कहा है कि उदारवाद के आरम्भ के साथ ही आर्थिक शक्ति एक वर्ग के हाथ से निकलकर दूसरे वर्ग के हाथों में चली गई। अर्थात यह उच्चवर्गीय जमींदारों के हाथों से निकलकर मध्यवर्गीय व्यापारियों के हाथों में चली गई। उदारवाद ने पूँजीवाद एवं औद्योगिक क्रान्ति को पनपने की सहायता दी और इसने व्यक्ति के विवेकशीलता पर विश्वास करते हुए व्यक्ति को समाज का केन्द्र स्वीकार किया।

इस प्रकार बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार उदारवाद की व्याख्याएँ भी बदली रहीं। यह ऐतिहासिक विकास के तीन स्तरों से गुजरा जिसके सबसे पहले चिरसम्मत उदारवाद, दूसरा आधुनिक या सकारात्मक उदारवाद तथा तीसरे को समकालीन उदारवाद कहते हैं।

चिरसम्मत उदारवाद या नकारात्मक उदारवाद का विकास इंग्लैण्ड में हुआ। यह वैयक्तिक आकांक्षाओं की सांविधानिक सुरक्षा की माँग तक सीमित था। लॉक, हर्बर्ट स्पेंसर, एडम स्मिथ आदि इसके समर्थक रहे हैं।

इसका मानना था कि परम्परा की बजाय मनुष्य की तर्कबुद्धि या विवेक ही चिन्तन का आधार होना चाहिए।

लॉक ने माना कि मनुष्य की स्वतन्त्रता को कायम रखना राज्य का कर्तव्य है। साथ ही लॉक ने प्रभुसत्ताधारी का अस्तित्व जनसाधारण की इच्छा पर निर्भर कर दिया।

एडम स्मिथ ने उद्योग एवं व्यापार की स्वतन्त्रता को प्राकृतिक स्वतन्त्रता का नाम दिया। उसके अनुसार सरकार को उद्योग धंधों के अहस्तक्षेप की नीति का अनुसरण करना चाहिए।

बेन्थम ने उपयोगिता की संकल्पना का विकास किया। उसके अनुसार जो बात सुख को बढ़ाती है एवं दुःख को कम करती है, उसे ही 'उपयोगिता' कहा जाता है। बेन्थम ने सामाजिक समझौता एवं सामान्य इच्छा के सिद्धान्त का खण्डन किया है।

बेन्थम ने गुणात्मक अन्तर की बजाय परिमाणात्मक अन्तर पर ज्यादा बल दिया है।

बेन्थम ने राज्य के अहस्तक्षेप की नीति एवं व्यक्तिवाद का समर्थन किया है।

आधुनिक उदारवाद — उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में चिरसम्मत उदारवाद की मान्यताओं में परिवर्तन होने लगा। स्वतंत्र का तब जब ग्रेट ब्रिटेन एवं अमेरिका में उदारवाद - स्वतंत्रता के नकारात्मक पक्ष के बजाय सकारात्मक पक्ष पर ध्यान दिया जाने लगा। उदारवाद की इसी नई व्याख्या को आधुनिक उदारवाद की संज्ञा दी जाती है। ~~प्रारम्भ में~~

प्रारम्भ में उदारवाद ने अभिजात वर्ग एवं मध्यवर्ग के निजी अधिकारों की संरक्षण की पूर्ति के पश्चात किसान वर्ग एवं मजदूर वर्ग, जिनकी स्थिति अब तक नहीं बदली थी और ना ही बदलने की उम्मीद थी, उदारवाद ने इन लोगों पर अपना ध्यान केन्द्रित करना शुरू कर दिया। इस समय तक उदारवाद को व्यवसायवाद से भी कई चुनौतियाँ मिलने लगी। कट्टरवादी मार्क्सवादी एवं अन्य समाजवादी भी उदारवाद को चुनौतियाँ देने लगे।

विवश होकर 1848 के बाद उदारवाद को लोकतंत्रीय, समाजवाद एवं राष्ट्रवादी मांगों के साथ तालमेल बिठाने की कोशिश करनी पड़ी।

सकारात्मक उदारवाद में निर्बल एवं निर्धन व्यक्तियों की के कल्याण एवं स्वतंत्रता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। और इस प्रकार यही आधुनिक उदारवाद कल्याणकारी राज्य की संकल्पना के रूप में विकसित हुआ।

मिल, ग्रीन, हॉबहाउस आदि इस विचारधारा के समर्थक रहे हैं।

मिल अंग्रेज दार्शनिक मिल पहला ऐसा उदारवादी विचारक था जिसने अहस्तक्षेप की नीति एवं व्यक्तिवाद का तो समर्थन किया किन्तु सामाजिक एवं आर्थिक यथार्थ को ध्यान में रखकर इसमें संशोधन कर दिया।

मिल ने आर्थिक उन्नति के लिए

कल्याणकारी राज्य का समर्थन किया

मिल के ने Tax की व्यवस्था का भी समर्थन किया उसके अनुसार धनी व्यक्तियों से प्राप्त Tax का सदुपयोग निर्धन लोगों के कल्याण के लिए होना चाहिए।

आगे चलकर ग्रीन ने भी रूसो, काण्ट, हेगल आदि विचारकों का अनुसरण कर कल्याणकारी राज्य के विचार को नई दिशा प्रदान किया

उदारवाद एवं समाजवाद का मिश्रित रूप जो मिल के विचारों में देखने को मिलता है उसे हॉबहाउस ने आगे बढ़ाया

मिल ने आर्थिक उदारवाद का खण्डन किया ग्रीन ने इस विचार का समर्थन किया तथा हॉबहाउस ने स्वतंत्रता के नकारात्मक दृष्टिकोण का खण्डन करके सकारात्मक स्वतंत्रता के विचार को आगे बढ़ाया।

हॉबहाउस के अनुसार राज्य साध्य है साधन नहीं।

लास्की ने बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में राज्य के उदारवादी सिद्धान्त को आगे बढ़ाया थे ऐसा वक्त था जब पूरा विश्व परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था प्रथम विश्व युद्ध के परिणाम, रूस में समाजवादी क्रान्ति, राष्ट्र संघ की स्थापना, इटली में फासीवाद का उदय, यूरोप की महामंदी और इन सभी घटनाओं ने विश्व को गहराई से प्रभावित किया ऐसी स्थिति में लास्की पूँजीवादी व्यवस्था के अस्तित्व के प्रति चिंतित था

लास्की के अनुसार अब तक पूँजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत सम्पूर्ण आर्थिक शक्ति कुछ मुट्ठी भर लोगों के हाथों में सिमट गया। पूँजीवादी व्यवस्था मानवाधिकारों के लिए व घातक सिद्ध होने के कगार तक पहुँचने लगा।

किन्तु लेखक ✱ वाकलूद लास्की ने साम्यवाद का विरोध करते हुए समाजवाद एवं लोकतन्त्र के सिद्धान्तों पर आधारित उदारवादी व्यवस्था का समर्थन किया साथ ही उसने लोक-कल्याणकारी को महत्व दिया।

मैकाइवर ने भी उसके वर्गों का समर्थन किया।

सकारात्मक उदारवाद के पश्चात कल्याणकारी राज्य की संकल्पना ~~अस्तित्व में~~ ~~आने~~ साकार होने लगी।

~~कल्याणकारी~~ कल्याणकारी राज्य में आधुनिकी की प्रक्रिया काफी तेज हो गई। अब ~~सामाजिक कल्याण एवं~~ राज्य का कार्य केवल औद्योगिक ~~गतिविधि~~ तक ही सीमित नहीं रह गया। बल्कि पर्यावरण सम्बन्धी बातों में भी हस्तक्षेप करना पड़ा। व्यक्ति के कल्याण की हर बातों पर ✱ ध्यान देना राज्य का कार्य हो गया। इस प्रकार कल्याणकारी राज्य की कल्पना साकार होने लगी।

लेकिन इस व्यवस्था में भी मजदूर वर्ग का विशेष कल्याण सम्भव न हो सका।

चिरसम्मत उदारवाद में जहाँ स्वतन्त्रता की नकारात्मक व्याख्या को प्रमुखता दी गई वहीं आधुनिक उदारवाद में व्यक्ति एवं समूहों की स्वतन्त्रता के लिए सकारात्मक स्वतन्त्रता को बढ़ावा दिया गया है।

जिसमें ✱ नकारात्मक स्वतन्त्रता को स्वेच्छातन्त्रवाद तथा सकारात्मक स्वतन्त्रता को समतावाद की संज्ञा दी गई।

इन दोनों के बीच का ✱ विवाद समकालीन उदारवाद का मुख्य विषय रहा। स्वेच्छातन्त्रवाद व्यक्ति के पूर्ण स्वतन्त्रता के विचार रखता है। उसका मानना है कि व्यक्ति के पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए उसे ✱ उसके आर्थिक गतिविधियों

नीतिवादियों के सब प्रकार के बन्धनों से मुक्त कर देना चाहिए। इस अर्थ में यह अराजकतावाद के निकट आ जाता है।

स्वेच्छातन्त्रवाद के समर्थक में बर्लिन, हेयक, नॉजिक, फ्रीडमैन आदि प्रमुख हैं।

नव उदारवाद की धारणा स्वेच्छातन्त्रवाद से काफी मिलती जुलती है। यह विचारधारा 1980 के दशक से U.S.A एवं U.K. में उभर कर सामने आई।

1980 के अन्तिम दशक में पूर्वी यूरोप के समाजवादी अर्थव्यवस्था ~~में~~ और में उत्पन्न संकट ने इसे और भी बढ़ा दिया 1990 के दशक के शुरुआत में इन व्यवस्थाओं के पतन एवं खासकर U.S.S.R. के पतन ने यह सिद्ध कर दिया कि राज्य के द्वारा संचालित अर्थ-व्यवस्था को बहुत दिनों तक कायम नहीं रखा जा सकता है। इस वक्त तक ~~Third~~ तीसरी दुनिया के देशों में व्यापक आर्थिक अव्यवस्था की सर्व ओर भ्रष्टाचार का बोल-बाला था इससे जन साधारण के मन में व्यापक असंतोष था इसने यह साबित कर दिया कि राज्य द्वारा नियंत्रित एवं संचालित अर्थ-व्यवस्था उपयुक्त नहीं है।

नव-उदारवाद के समर्थक स्वेच्छा से प्रेरित व्यवस्था को उत्तम व्यवस्था मानते हैं।

भारत के विषय में नव-उदारवाद से प्रेरित तीन नीतियों को अपनाया जा रहा है। उदारीकरण, निजीकरण, ~~भूमण्डली~~ भूमण्डलीकरण।

आगे चलकर समतावाद ने स्वेच्छातन्त्रवाद की बुराईयों को भी उजागर किया है।

समतावादियों के अनुसार स्वेच्छातन्त्रवाद समाज के शक्तिशाली वर्ग के उन्नति के मार्ग में आने वाली सारी

बाधाओं को समाप्त कर देना चाहते हैं। अन्य जरूरतमंद लोगों की जरूरतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है।

मैकफर्सन, रॉल्स आदि विचारकों ने निचले स्तर तक लाभ पहुंचाने की अपील की।

इन विचारकों के अनुसार स्वेच्छातन्त्रवाद ने लोकतन्त्र के मूल भावना पर चोट किया है। लोकतन्त्र में निर्धन मनुष्यों की स्थिति को ध्यान में रखकर ही प्रगति के लक्ष्य का निर्धारण किया जाना चाहिए।